द्वारा निर्मित उत्पादों के नाम तथा अन्य ब्यौरा उनकी मात्रा तथा मूल्य क्या है ; और

(ग) उपरोक्त अवधि में प्रत्येक कागज मिल ने वर्ष वार कितने मूल्य के कागज का निर्यात किया है और किन किन देशों को ?

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद) : (क) तथा (ख). एक विवरण जिसमें जिलों के नाम, पते, क्षमता तथा प्रत्येक मिल का 1965, 1966 और 1967 में उत्पादन दिया गया है सभा पटल पर रख दिया गया है। [**पुस्तकालय में रखा गया। देखिये संख्या** LT-896/68] निम्न लिखित कागज मिलों में विदेशी पूंजी का अंश उनके सामने लिखी सीमा तक है :—

1. मैं० त्रिवेणी टिशुज प्रा० लि० कलकत्ता 100 प्रतिशत
2. मैं० साउथ इण्डिया पेपर मिल्ज, लि० मैसूर 67 प्रतिशत
3. मैं० सेनापति वाइटली प्रा० लि० बंगलौर 50 प्रतिशत
4. मैं० मन्ध नेशनल पेपर मिल्ज, लि० बंगलौर लगभग 27 प्रतिशत
5. मैं० सेशासाइ पेपर एण्ड बोर्डज् लि० मद्रास लगभग 20 प्रतिशत

शेष सभी कागज मिलें पूर्णतः भारतीय हैं।

पूंजी विनियोजन, प्रत्येक मिल के विदशकों के नाम और प्रत्येक मिल का कुल उत्पादन सम्बन्धी जानकारी प्रत्येक के प्रतिवेदनों में उपलब्ध है जो कि प्रत्येक मिल द्वारा प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता है।

(ग) किसी भी उत्पाद के पार्टीशः निर्यात के आंकड़े नहीं रखे जाते। तथापि कागज तथा कागजों के उत्पादों (प्रकाशनों को छोड़ कर) का 1966-67 तथा अप्रैल से दिसम्बर, 1967 में कुल निर्यात 219.9 लाख रुपये तथा 214 लाख रुपये क्रमशः था। इस निर्यात का कुछ अंश मिश्र को गया है किन्तु अधिकांश दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों जैसे बर्मा, थाइलैण्ड, फिलिपीन, हांगकांग आदि को हुआ है।

देशी और विदेशी कागज मिल

7479. **श्री अर्जुन सिंह भदौरिया** : क्या **औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भारतीय तथा विदेशी कागज मिलों या कम्पनियों में कितने विदेशी कर्मचारी काम करते हैं, उनका वेतन कितना है और उनके द्वारा विदेशों को कितनी कितनी राशी भेजी जाती है ;

(ख) गत चार वर्षों में वर्षवार प्रत्येक मिल या कम्पनी को कुल कितनी विदेशी मुद्रा दी गई, कितना कच्चा माल विदेशों से मंगवाया गया और किस उद्देश्य के लिए मंगवाया गया ; और

(ग) गत चार वर्षों में विदेशी कागज मिलों ने लाभ की कितनी राशि प्रतिवर्ष विदेशों को भेजी है और उपरोक्त अवधि में उनमें से प्रत्येक ने प्रतिवर्ष कितना लाभ कमाया है ?

औद्योगिक विकास तथा समवाय-कार्य मंत्री (श्री फखरुद्दीन अली अहमद) : (क) से (ग). पूछी गई जानकारी अभी उपलब्ध नहीं है। यह इकट्ठी की जा रही है और सभा पटल-पर रख दी जायगी।

बीना जंक्शन से मद्रास तक यात्रियों के लिये स्थानों के कोटे का नियतन

7480. **श्री ओंकार लाल बेरवा** : क्या **रेलवे** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि बीना जंक्शन से मद्रास तक यात्रा करने वाले यात्रियों के लिये स्थानों का कोई कोटा निर्धारित नहीं किया गया है ; और

(ख) यदि हां, तो यात्रियों को होने वाली असुविधा को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की जा रही है ?

रेलवे मंत्री (श्री चे० मु० पुनाचा) : (क) जी, हां। बीना जंक्शन के लिए अलग से कोई कोटा नहीं रखा गया है।

(ख) दिल्ली/नई दिल्ली से मद्रास जाने वाली सभी गाड़ियों में रास्ते के स्टेशनों से चलने वाले यात्रियों के लिए आरक्षण का उपयुक्त कोटा निर्धारित है और यह सुविधा बीना से मद्रास जाने वाले यात्रियों को भी सुलभ है।

मिर्चों का निर्यात करने के लिये व्यापार प्रतिनिधि मण्डल

7481. **श्री टी० पी० शाह :** क्या वाणिज्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि सरकार का विचार मिर्चों का निर्यात करने के लिये नई मण्डियों का पता लगाने के हेतु एक प्रतिनिधि-मण्डल विदेशों में भेजने का है;

(ख) यदि हां, तो उपर्युक्त प्रतिनिधि-मंडल के किस तारीख तक विदेशों में भेजे जाने की संभावना है; और

(ग) उस पर कितना धन व्यय होने की सम्भावना है ?

वाणिज्य मन्त्रालय में उप-मन्त्री (श्री महम्मद शफी कुरेशी) : (क) जी, हां।

(ख) तथा (ग). अध्यक्ष, मसाला निर्यात संवर्धन परिषद्, एर्णाकुलम के परामर्श से ब्यौरे की बातें तय की जा रही हैं।

Passenger Trains

7482. SHRI NITIRAJ SINGH CHAUDHARY : Will the Minister of RAILWAYS be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 4397 on the 19th April, 1968 and state :

(a) the reasons for not increasing so far the number of trains between Bombay-Calcutta *via* Allahabad and Delhi-Bombay *via* Itarsi in the same proportion as on Delhi-Madras, Bombay-Madras and Calcutta-Madras ;

(b) whether the number of trains on these lines are proposed to be increased ; and

(c) if so, when and if not, the reasons therefor ?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. M. POONACHA) : (a) Lack of requisite resources by way of line capacity on the sections enroute, paucity of coaching stock, apart from inadequate facilities at the terminal stations,

(b) Yes, as soon as the requisite resources/facilities become available.

(c) It is not possible to indicate the exact date at this stage.

Goods lost from Katni and Itarsi Yards

7483. SHRI NITIRAJ SINGH CHAUDHARY : Will the Minister of RAILWAYS be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 4398 on the 19th March, 1968 and state :

(a) the reasons for detention of wagons at Katni and Itarsi Yards during 1966 and 1967 ;

(b) whether reports have been received this year that the above detention was partly because of mischief of Railway staff in collusion with some merchants ; and

(c) if so, the action taken in the matter ?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. M. POONACHA) : (a) Wagons suffered detentions for the following reasons :—

(i) Wagons marked sick for repairs and transhipment.

(ii) BOX wagons marked sick, after repairs having to wait for clearance by proper rakes.

(iii) Local wagons required to be dealt with in goods shed, repacking shed etc. having to undergo a number of operation like placement, loading, unloading and withdrawal.

(iv) Regulation of certain streams of traffic owing to accidents, accumulation, civil disturbances and other unusual occurrences etc. on the adjoining sections.

(b) No.

(c) Does not arise.